ख़ास ख़ोज-ख़बर

झुंझुनूं के बीडीके अस्पताल में अजीब वाकया सामने आया है, जिससे चिकित्सा महकमे में हड़कंप मच गया

श्मशान में चिता पर हिलने लगा व्यक्ति तो हरकत में आया प्रशासन, पीएमओ सहित तीन डॉक्टरों पर गिरी गाज

● मंथन खोजी संवाददाता

झुंझुनूं। एक डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। दूसरे ने कागजों में पोस्टमार्टम कर दिया। संस्था वाले अंतिम संस्कार के लिए ले गए। चिता पर लेटाते ही उसकी सांसे फिर चलने लगी और हिलने लगा। यह अजीब वाकया 21 नवम्बर 2024 को झुंझुनूं के बीडीके अस्पताल में सामने आया है। डॉक्टरों का ऐसा कारनामा सामने आने के बाद चिकित्सा महकमे में हड़कंप मच गया। जिला कलक्टर ने पूरी मामले की जांच के लिए समिति गठित की है। साथ ही रात 12 बजे बाद पीएमओ सहित तीन चिकित्सकों निलंबित कर दिया गया। लेकिन, इस घटना ने चिकित्सकों की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर दिए है।

जिला कलेक्टर रामावतार मीणा की अनुशंसा पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव निशा मीणा ने देर रात बीडीके के पीएमओ डॉ. संदीप पचार, डॉ. योगेश कुमार जाखड़ व डॉ. नवनीत मील को निलम्बित कर दिया। डॉ. जाखड मंडेला में कार्यरत है, लेकिन कार्यव्यवस्था के तहत उसे बीडीके में लगा रखा था। निलम्बन काल के दौरान डॉ.

पचार का मुख्यालय सीएमएचओ ऑफिस जैसलमेर, डॉ. जाखड़ का मुख्यालय सीएमएचओ ऑफिस बाडमेर व डॉ. नवनीत मील का मुख्यालय सीएमएचओ ऑफिस जालोर किया गया है।

ये है पूरा मामला

झुंझुनूं के बगड़ स्थित मां सेवा संस्थान के आश्रय गृह में रहने वाले रोहिताश्व (47) की 21 नवम्बर 2024 दोपहर तबीयत बिगड़ गई। वह बोल व सुन भी नहीं सकता। तबीयत बिगड़ने पर उसको दोपहर में झुंझुनूं के बीडीके अस्पताल लाया गया। अस्पताल की इमरजेंसी में इलाज शुरू किया गया। यहां इलाज के दौरान दोपहर करीब डेढ़ बजे डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद उसे अस्पताल की मोर्चरी में रखे डीप फ्रीज में भी रखवा दिया गया। करीब दो घंटे बाद पोस्टमार्टम किया गया।

चिता के आग लगते ही तेजी से हिलने लगा शव, भगदड़ मची, बाद में समझ आया पूरा माजरा

बाद में पुलिस को बुलाकर पंचनामा बनाया गया। डॉक्टरों ने मृत मानकर व्यक्ति को मां सेवा संस्थान के पदाधिकारियों को सौंप दिया। संस्था के लोग देर शाम व्यक्ति को एम्बुलेंस की मदद से श्मशान घाट ले गए। यहां पर उसे चिता पर रख दिया गया। इस दौरान व्यक्ति की सांस चलने लगी। उसके शरीर में हरकत देखकर वहां मौजूद लोग भी डर गए। इसके बाद उसे तुरंत एंबुलेंस बुलाकर वापस अस्पताल लाया गया। अब उसका बीडीके अस्पताल में इलाज चल रहा है। आईसीयू में भर्ती किया गया है। अभी हालत सामान्य बताई जा रही है।

लेबनान दुनिया के सबसे गुस्सैल देशों की लिस्ट में पहले नंबर मौजूद है

आ गई दुनिया की सबसे ज्यादा गुस्सा करने वाले देशों की लिस्ट, ये मुस्लिम देश टॉप 5 में शामिल, जानें क्या है भारत का नंबर

● मंथन विदेश ब्यूरो

न्यूज डेस्क। दुनिया में अलग अलग देशों में रह रहे नागरिकों को लेकर कई तरह की लिस्ट सामने आती रहती हैं, जैसे हैप्पीनेस इंडेक्स लिस्ट, अमीर देशों की लिस्ट, गरीब देशों की लिस्ट आदि। ऐसी ही एक और लिस्ट सामने आई है, जो गुस्से पर आधारित है। इस सूची को गैलप ने तैयार किया है। 2024 ग्लोबल इमोशंस रिपोर्ट के अनुसार लेबनान दुनिया के सबसे गुस्सैल देशों की लिस्ट में पहले नंबर मौजूद है। इसकी लगभग 49 प्रतिशत आबादी ने गुस्सा महसूस करने की बात कही है। यह आंकड़ा देश में चल रहे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संकटों की गंभीरता को दर्शाता है। इस वक्त लेबनान इजरायल के साथ जारी जंग में उलझा हुआ है, जिसकी वजह से वहां की जनता काफी निराश है। इस दौरान इजरायली हमलों में अब तक करीब 3000 लोगों की मौत भी हो चुकी है, जिसके कारण देश में पैदा हुए विनाशकारी आर्थिक स्थिति ने जनता में व्यापक असंतोष पैदा किया है। सांप्रदायिक विभाजन और संघर्ष ने समाज को और अधिक अस्थिर बना दिया है।

गुस्सैल देशों की सूची में भारत की स्थिति

लेबनान के अलावा दूसरे नंबर पर 48 फीसदी के साथ तुर्किए है। जो बीते साल

भूकंप से हुई तबाही और आर्थिक संकट की वजह से अब तक उबर नहीं पाया है। तीसरे नंबर पर आर्मेनिया है। जो हाल के समय में नागोर्नो-काराबाख संघर्ष और क्षेत्रीय अस्थिरता से परेशान है। इसके अलावा सूची में इराक, अफगानिस्तान, जॉर्डन, माली और सिएरा लियोन भी शामिल हैं। हालांकि, इस सूची में भारत का कौन सा नंबर है इसकी जानकारी उपलब्ध नहीं है।

लेबनान में गुस्सा बढ़ने की वजह

लेबनान में गुस्सा बढ़ने की सबसे बड़ी वजह है हिज्बुल्लाह का प्रभाव। इसकी सैन्य और राजनीतिक ताकत ने शासन व्यवस्था को कमजोर कर दिया। इजरायल के साथ बढ़ते तनाव ने लेबनानी लोगों के बीच असुरक्षा को और गहरा किया। इस वजह से देश को 2024 में 6।6 प्रतिशत आर्थिक गिरावट का सामना करना पड़ा है।कभी मध्य पूर्व का स्विट्जरलैंड कहा जाने वाला लेबनान अब राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता का प्रतीक बन गया है।

स्पेशल खबर

'पहला बूमरैंग उल्कापिंड' होने का दावा

जमीन से उछलकर पहुंचा स्पेस, हजारों साल बाद धरती पर लौटा... सहारा में मिला पहला 'बूमरैंग उल्कापिंड'

● मंथन विदेश ब्यूरो

रबात। कुछ साल पहले मोरक्को के सहारा रेगिस्तान में एक गहरा लाल-भूरा पत्थर मिला था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह पत्थर पृथ्वी की एक चट्टान है जो पहले अंतरिक्ष में गया और हजारों साल बाद वापस अपने घर लौट आया। यह पत्थर अभी भी बरकरार है जो अपने आप में आश्चर्यजनक है। अगर वैज्ञानिकों का यह अनुमान सही है तो चट्टान को आधिकारिक तौर पर धरती से बूमरैंग करने वाले पहले उल्कापिंड का नाम दिया जाएगा। खोज टीम ने अपना काम पिछले हफ्ते एक इंटरनेशनल जियोकैमिस्ट्री कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत किया जो अभी तक किसी जर्नल में प्रकाशित नहीं हुआ है।

जर्मनी में गोएथे यूनिवर्सिटी फ्रैंकफर्ट के भूविज्ञानी फ्रैंक ब्रेनकर ने कहा, 'मुझे लगता है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक उल्कापिंड है। हालांकि यह बहस का विषय है कि यह वास्तव में पृथ्वी से है या नहीं।' ब्रेनकर इस अध्ययन में शामिल नहीं थे। शुरुआती जांच से पता चलता है कि पत्थर की रासायनिक संरचना पृथ्वी पर ज्वालामुखीय चट्टानों के समान ही है। उल्कापिंड का नाम ह्ह्ड्ड 13188 है और इसका वजन लगभग 646 ग्राम है। एक ही रास्ते पर चल रहे दो ग्रह! अंतरिक्ष में इस अनोखी जोड़ी की एक ही ऑर्बिट, वैज्ञानिकों ने की दुर्लभ खोज

अंतरिक्ष में होने के सबूत मिले: इसे 2018 में मोरक्को के सहारा रेगिस्तान के एक अज्ञात हिस्से में खोजा गया था। किसी ने भी चट्टान को पृथ्वी पर गिरते हुए नहीं देखा था। खोजकर्ताओं को बेरिलियम-3, हीलियम-10 और नियॉन-21 सहित आइसोटोप के निशान भी मिले हैं, जो दिखाते हैं कि चट्टान ब्रह्मांडीय किरणों के संपर्क में थी। इन आइसोटोप के स्तर से पता चलता है कि चट्टान कम से कम 10,000 वर्षों से अंतरिक्ष में थी या संभवत: इससे भी अधिक समय तक।

धरती से अंतरिक्ष में कैसे गया उल्कापिंड?

यह उल्कापिंड धरती से अंतरिक्ष में कैसे गया, इसकी दो संभावनाएं हैं। पहला, एक विशाल ज्वालामुखी विस्फोट ने इसे सीधे अंतरिक्ष में भेज दिया और दूसरा यह कि चट्टान एक विशालकाय ऐस्टरॉइड की टक्कर के कारण वायुमंडल से बाहर चली गई। शोधकर्ताओं का मानना है कि बाद वाली घटना की संभावना सबसे ज्यादा है क्योंकि कोई भी इतना शक्तिशाली ज्वालामुखी विस्फोट रिकॉर्ड में नहीं है जो चट्टानों को अंतरिक्ष में लॉन्च कर सके।

पिछले दो दशकों के दौरान वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह के कई स्थानों पर बर्फ की खोज की है

धूल भरी है मंगल ग्रह की बर्फ, शोध में आया सामने

● मंथन विदेश ब्यूरो

वाशिंगटन। हाल ही में एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए एक नए शोध से पता चला है कि मंगल ग्रह की बर्फ धूल से भरी है। यही नहीं शोधकर्ताओं के अनुसार वो पिघल सकती है। इसके साथ ही एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी से जुड़े वैज्ञानिक आदित्य खुल्लर और फिलिप क्रिस्टेंसन के साथ वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के बर्फ विशेषज्ञ स्टीफन वॉरेन ने मिलकर, मंगल ग्रह की बर्फ वास्तव में कितनी धूल भरी है इस बात के निर्धारण के लिए एक नया दृष्टिकोण भी विकसित किया है। इससे जुड़ा शोध जर्नल ऑफ जियोफिजिकल रिसर्च: प्लैनेट्स में

प्रकाशित हुआ है।

गौरतलब है कि पिछले दो दशकों के दौरान वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह के कई स्थानों पर बर्फ की खोज की है। इनमें से अधिकांश को नासा के मार्स रिकोनिसेंस ऑर्बिटर जैसे कक्षीय उपग्रहों की मदद से देखा गया है। लेकिन ऊपर से देखने पर इस बात का निर्धारण करना चुनौतीपूर्ण है कि इस बर्फ में कितनी धूल है। वैज्ञानिकों की मानें तो बर्फ से जुड़ी यह जानकारी बहुत मायने रखती है क्योंकि इसकी मदद से यह पता लगाया जा सकता है कि यह बर्फ कितनी पुरानी और और उसे कैसे जमा किया गया था। बर्फ में धूल की मात्रा का निर्धारण करने के लिए वैज्ञानिकों ने फीनिक्स मार्स लैंडर और मार्स रिकोनिसेंस ऑर्बिटर के डेटा का उपयोग किया है। जिसके लिए उन्होंने इन आंकड़ों को कंप्यूटर सिमुलेशन की मदद से विश्लेषित किया है। इस सिमुलेशन की मदद से वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर मौजूद बर्फ की चमक का धरती पर ग्लेशियर में जमा बर्फ की चमक से मिलान करने में सक्षम थे।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रुपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रुपए

नोट :-
1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

आइजोल में स्थित ओम मंदिर अपनी संरचना और स्थापत्य शैली के कारण भगवान शिव का एक अलग और विशेष मंदिर

बोलती तस्वीर मिजोरम में ओम मंदिर अपनी संरचना और स्थापत्य शैली के कारण भगवान शिव का एक अलग और विशेष मंदिर है। मंदिर की खासियत इसका आकार ओम की संरचना को दर्शाता है। आइजोल में हिंदुओं के लिए यह मंदिर सबसे अधिक पूजनीय है क्योंकि वहां हिंदू मंदिर कम थे। यह सब कुछ है जिससे आप पूर्वोत्तर भारत के प्रसिद्ध मंदिरों के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पक्ष का पता लगा सकते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेयन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।